प्रेस रिलीज

मुम्ताज शायर डॉ0 कलीम अहमद आजिज़ और मश्हूर अदीब हम्माद अन्जुम का इन्तिकाल इल्मी दुनिया का अजीम खसारा

ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती उर्दू, अरबी–फारसी विश्वविद्यालय, लखनऊ के अरबी विभाग के तहत शोक सभा का आयोजन।

लखनऊ, 19 फरवरी 2015।

मुम्ताज शायर डॉ0 कलीम अहमद आजिज़ और हम्माद अन्जुम पर ख्वाजा मुईनुद्दीन चिष्ती उर्दू, अरबी–फारसी विष्वविद्यालय, लखनऊ के अरबी विभाग ने एक शोक सभा का आयोजन किया जिसकी अध्यक्षता प्रो0 मसऊद आलम फलाही ने की।

सभा का आरम्भ बी0ए0 अरबी विभाग प्रथम वर्ष के छात्र मो0 साकिब की तिलावते कलाम पाक से हुआ जिसमें मो0 फुरकान आलम बी0ए0 अरबी विभाग दित्तीय वर्ष ने डॉ0 कलीम आजिज के व्यक्तित्व और शायरी पर रौशनी डाली। उन्होंने कहा कि कलीम आजिज का संबंध अजीमाबाद (पटना, बिहार) से था जिसको रासिख अजीमाबादी, इम्दाद इमाम असर और शाद अजीमाबादी ने अपनी रचनात्मक कोशिशों से काफी बुलन्दी पर पहुंचाया था। इसी परम्परा में कलीम अहमद आजिज ने अपनी शायरी की शुरूआत की। उन्होंने अपनी शायरी को केवल हुस्न व जमाल से ही नहीं बल्कि वर्तमान समस्याओं से भी जोड़ा। उन्होंने अपने दौर की तमाम बड़ी समस्याओं को बहुत ही सादगी से अपने शैरों में इस तरह व्यक्त किया कि उनकी शायरी अपने दौर के यथार्थ को पूरी तरह से सामने लेकर आती है। इसका जीवन्त उदाहरण उनका पहला काव्य–संग्रह ''वह जो शायरी का सबब हुआ'' है। उनके साहित्यिक रचनाओं को रेखांकित करते हुये उन्हें पद्म श्री सम्मान से नवाजा गया। उनकी प्रसिद्ध रचना ''वह जो शायरी का सबब हुआ'' है। इसके अतिरिक्त ''जब फस्ले बहारां आई थी'',''फिर ऐसा नजारा नहीं होगा'' और जहां खुशबू ही खुशबू थी'',''अभी सुन लो मुझसे'' (आत्मकथा) भी उनकी महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं। डॉ0 कलीम आजिज के व्यक्तित्व पर जवाहर लाल नेहरू के रिसर्च स्कालर जावेद अब्दुल अजीज ने ''कलीम आजिज शख्सियत और नसरी निगारिशात'' के शीर्शक से डॉक्ट्रेट की डिग्री भी हासिल की है। यकीनन डॉ0 आजिज की मृत्यु इल्मी और अदबी दुनिया कि लिये एक बड़ी क्षति है।

इसी तरह दूसरा साहित्यिक व्यक्तित्व हम्माद अन्जुम (जो कि वरिष्ठ पत्रकार सुहैल अन्जुम और डॉ0 षम्स कमाल अन्जुम, अध्यक्ष अरबी विभाग, बाबा गुलाम शाह बादशाह युनिवर्सिटी, राजौरी, जम्मू कशमीर, के बड़े भाई हैं) पर अरबी विभाग के बी0ए0 दूसरे साल के छात्र बिलाल असगर ने उनके साहित्यिक अवदानों पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि एडवोकेट हम्माद अन्जुम प्रसिद्ध साहित्यकार, लोकप्रिय शायर और जबरदस्त कानून के माहिर थे। उन्होंने आगे कहा कि आप पेशे से वकील थे साथ ही आप को शायर और साहित्यकार की हैसियत से भी शोहरत मिली थी। पड़ोस के मुशायरों में आप काफी

लोकप्रिय थे। गजलों के अलावा आपने धार्मिक कवितायें भी लिखी हैं। आपके कई काव्य–संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें ''शम्ये हिरा'',''बहारे हम्द'',''शाखे गुले तर'' और वर्तमान में प्रकाशित ''नूर ना दीदा'' काफी महत्वपूर्ण रचनायें हैं। आपकी मृत्यु से साहित्यिक जगत में एक बड़ा रिक्त स्थान पैदा हो गया है जिसकी पूर्ति नहीं की जा सकती है।

इस शोक सभा के समापन पर उर्दू विभाग के असिस्टेन्ट प्रोफेसर डॉ0 आजम अंसारी ने भी उपर्युक्त दोनों व्यक्तित्व के खास पक्षों पर रौशनी डालते हुये उनको श्रद्धान्जलि पेश की।

इस शोक सभा में अरबी विभाग के प्रो0 मसऊद आलम फलाही, असिस्टेन्ट प्रोफेसर डॉ0 अब्दुल हफीज, उर्दू विभाग के असिस्टेन्ट प्रो0 डॉ0 मुर्तजा अली अतहर और डॉ0 आजम अंसारी के इलावा छात्र–छात्राओं की बड़ी संख्या खास तौर से अरबी, उर्दू और फारसी विभाग ने भाग लिया। सभा के अंत में मरहूमीन के लिये दुआये मगफिरत और उनके घर वालों के लिये सब्रे जमील की दुआ की गई।